

१७२

७  
७  
७  
७

५  
२०५







॥ अथ निगलं वस्वरूप प्रकाश ॥

॥ अर्थानि ॥

॥ भाषातिलक निगलं बोपनिषद् ॥

॥ वेदान्तप्रक्रिया ॥

विदित हो कि इस ग्रन्थ को श्री युत राकुर  
गजाधर प्रसाद साहेब श्री वासुनाभ वंशी  
राय वेरेली रईस शहर लखनऊ वर्तमान  
निज स्थान श्री काशीपुरी समीप श्री विश्व  
नाथ काशी करवट नै श्री युत पण्डित रा  
मेश्वर परम प्रकाश हिजो नमकान् कु  
ल मंडल प्रतिष्ठित वंश विपाटी चतुर्ज  
हंगीरावादी जिला कानपुर के परम स  
हायता से अति परिश्रम के साथ अर्थानि  
पर्य्य संयुक्त निर्मित करी हर एक जीवों के

२५५

उपकारार्थ

वनारस

श्री १०८ मन्महाराजाधिराज काशिराज

बहादुर के वारहदरी में विश्वनाथसुं

धानिवास यन्त्रालय में संहित कराया







॥ श्रीगणेशायनमः

साम्बसदाशिवायनमः ॥

पृथिवीसलिलंतेजोवायुराकाशमेवच  
॥ सूर्याचन्द्रमसौ सोमयागश्चैवाष्टमूर्ते  
यः ॥ ब्रह्मासुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भा  
नुः शशीभूमिसुतोबुधश्च ॥ गुरुश्चशु  
क्रः शनिराहुकेतवः सर्वेग्रहाः शान्ति  
करा भवन्तु ॥

सच्चिदानन्दस्वरूपायनमः ॥

लक्षणश्चरुप्रमाणकरिवस्तुकीसिद्धि  
होवैहै ॥ तहांसुनो ॥ ग्रन्थके आरंभमें  
शान्तिमंगल ॥ ग्रन्थकीनिर्बिघ्नसमा  
प्ति ॥ अरुश्रेष्ठाचार ॥ अरुग्रन्थकर्ता  
मेंनास्तिकभ्रान्तिकीनिवृत्ति ॥ इत्यादि  
कमंगलकेप्रयोजनहैं ॥ सोपरमशान्ति  
निराकारकोनिर्देशकहिए ॥ कीर्त  
नक्या ॥ जगतमंगल ॥ वस्तुनिर्देशरु



प ॥ अरु आ श्रीर्वीद रूप ॥ अरु नम  
स्कार रूप भेद ते विधा है ॥ सगुण वा नि  
र्गुण वस्तु रूप परमात्मा ही है ॥ तिसका  
निर्देश कहिए ॥ कीर्तन वस्तु निर्देश क  
हिए आत्मा ही कीर्तन है

अथ श्रुतिः प्रमाणं ॥  
सगुणानिर्गुणस्वरूपं ब्रह्म ॥

इति श्रुतेः

श्री आदि जो सगुण रूप है ॥ तिस को न  
मस्कार है ॥ अरु सतचित आनन्द स्व  
रूप जो निर्गुण निराकार व्यापक ब्रह्म है  
तिस को न मस्कार है ॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः भद्रं  
पश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरैरङ्गैस्तुष्टु  
वाग्ं स्वस्तनूभिः व्यशेम देवहितं यदा  
युः स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पू  
षा विश्ववेदाः स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्ट



नेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्देधातु ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

श्रीपरमात्मने नमः

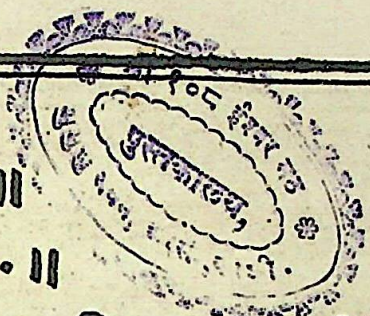
॥ अथ प्रस्तावना ॥

सर्वमतशिरोमणि आम्नायमस्तु क क  
हिए वेदों का शिरो भाग अद्वैत उ प निषद  
है ॥ सोई सुमुख को उ पादेय कहिए ॥ ग्र  
हण करने योग्य है ॥ श्रीसूत्र भाष्यादिक  
अनेक संस्कृत ग्रन्थ हैं ॥ तिनके यथार्थ  
अर्थमें अप्रवीण की प्रवृत्ति होवै नहीं ॥ स  
मय अनुकूल कि प्रायः मनुष्य व्यावहारि  
क विद्यामें अमविशेष करते हैं ॥ अ  
रु विना अध्यात्म विद्या के देहात्मवादी  
विषय सुख को ही परम पुरुषार्थ मानते हैं  
॥ याते परमार्थ विद्या कि जिसका फल म  
नुष्य ही शरीरमें होता है ॥ ऐसी संस्कृत  
विद्यामें यथार्थ अम होवै नहीं ॥ परन्तु म



नृष्य शरीरवान को उचित है ॥ कि ब्रह्म  
 विद्या जो सर्व विद्या का आश्रय भूत पर  
 विद्या है ॥ तिसके भी श्रवण मन न विषे  
 पर परार हैं ॥ क्यों कियह जो सुख मुख  
 महादुःख रूप पंच विषयात्मक प्रपंच है ॥  
 तिसकी सत भावना कानाश अपने आप  
 अज अविनाशी चैतन्य आत्मा के अपरो  
 स अनुभव होने से ही हो जाता है ॥ संस्कृत  
 विद्या का बोध बिना व्याकरण पठित यथा  
 र्थ नहीं हो सकता ॥ एतदर्थं संस्कृत रहित जे  
 वैराग्य शील शान्त आत्मा आत्म जिज्ञा  
 सु है तिनके विचारार्थ परमो प्रकारी महा  
 त्मा पुरुषों ने भाषा करि बहुत गु प्रवस्तु को  
 तादृश ही प्रकाश कर दिया है सो भी धन्य है  
 ॥ वेद शास्त्र स्मृति इतिहास पुराण आ  
 दिकों में मोक्ष का मीमुक्षु के अर्थ यही  
 अभेद ब्रह्म विद्या प्रकाशित है ॥ नान्यः





पंथाविमुक्तये ॥

॥ इति श्रुतेः ॥

॥ अथ विज्ञापन ॥

सर्वसत्यावलम्बी सज्जनविचारशीलपाठकजनों  
परविदितहोकि श्रीमतपरब्रह्मपरिव्राजकाचार्य  
परमहंसतारकब्रह्मानन्दसरस्वतीजगदाख्यात  
गोडस्वामीतत्पादपूज्यगजाधरप्रसादचित्रगुप्तवं  
शाख्यात श्रीवास्तुनाभवंशीरायवरैलीनिवास-  
स्थान श्रीलक्ष्मणपुरप्रसिद्धनामलखनऊ शहर  
प्रथमअमृतसुखबोधिनीनामवेदान्तप्रक्रियाग्रं  
थकोनिर्माणकरचुकाहूँ ॥ सोई अब परमगंभीरम  
तअद्वैतपदनिरालंबस्थार्ई श्रीपण्डितरामेश्वरपर  
मप्रकाश द्विजोत्तमकान्हूकुजमंडलप्रतिष्ठितवंश  
त्रिपाठीचतुर्जहंगीराबादीजिलाकान्हूपूरकेअम  
सहायतासेअमृतसुखबोधिनीकल्पवृक्षकाफ  
लरूपनिरालम्बस्वरूपप्रकाशनामग्रंथसर्ववेदा  
तकासिद्धांतअर्थतामस्यसमदर्शीतत्त्ववेतासंत  
महात्मावोंकोनमस्कारकरनिर्माणकरताहूँ ॥ वि



दितवेद्यमहात्मापुरुषभूलचूकक्षमाकीजियो॥

॥ ॐ सत्यं ज्ञानमनंतब्रह्म ॥

तस्माद्वा एतस्मादात्मनः आकाशः संभूतः आ  
काशाद्वायुः वायोरग्निः अग्नेरापः अद्वाः पृथिवी  
॥ पृथिव्या औषधयः औषधीभ्योऽन्नम् अन्ना  
द्देतः रेतसः पुरुषः सवाएषः पुरुषोऽन्नरसमयः तस्येदमे  
वशिरः अयंदक्षिणः पक्षः अयमुत्तरः पक्षः अय  
मात्मा इदं पुच्छं प्रतिष्ठातदप्येष श्लोको भवति ॥  
अर्थ ॥ तस्मात् कहिये। तिससे ॥ एतस्मात् कहि  
ए। इससे। आत्मनः कहिये। सत्चित् आनंद निरा  
कार व्यापक आत्मस्वरूप ब्रह्म है ॥ आकाशः क  
हिये। शब्दगुणवाला सब का अवकाश देनेवाला।  
संभूतः कहिये उत्पन्न भया। आकाशात् कहिये ति  
स आकाशते। वायु कहिये। स्पर्शगुणवाला ॥ सं  
भूतः कहिये उत्पन्न भया। वायोः कहिये। तिस वायु  
से अग्निः कहिये। तेज रूप उष्णगुणवाला। संभूतः  
कहिये। उत्पन्न भया। अग्नेः कहिये तिस अग्निसे ॥  
आपं कहिये। रसरूप शीतगुणवाला जल। संभूतः



कहिये उत्पन्न भया । अद्भ्यः कहिये तिस जल से ॥  
 पृथिवी कहिये कठोर रूप गंध गुण वाली । संभूता ।  
 कहिये । उत्पन्न भई । पृथिव्या । कहिये । तिस पृथि-  
 वी से । औषधयः कहिये । औषधीयां । संभूताः क-  
 हिये । उत्पन्न भई । औषधीभ्यो कहिये । तिन औष-  
 धियों से । अन्न कहिये । धान्य । संभूतः कहिये उत्पन्न  
 भया । अन्नात् कहिये । तिस अन्न से । रेतः कहिये वी-  
 र्य । संभूतः कहिये । उत्पन्न भया । रेतसः कहिये । तिस  
 वीर्य से । पुरुषः कहिये । मस्तक और हस्त आदि आ-  
 कार वाला पुरुष । संभूतः कहिये उत्पन्न भया । सकहि-  
 ये । सो । वा कहिये । प्रसिद्ध । एषः कहिये । यह । पुरुष ।  
 कहिये । शरीर । अन्नर समयः कहिये । अन्न है र समय ।  
 जिसमें । अर्थात् अन्न के रस का विकार है ॥ तस्य क-  
 हिये । तिस । इदम् कहिये । इस । अन्नर समय पुरुष क-  
 ॥ एव कहिये । प्रसिद्ध । शिरः कहिये । मस्तक । अयं क-  
 हिये । यह । दक्षिणः पक्षः कहिये । दहिना बाहु । अयं  
 कहिये । यह । उत्तरः पक्षः कहिये । वाम बाहु । अयं क-  
 हिये । यह देह के मध्य भाग अंगों का आत्मा है । इदं क-



हिये। यह नाभी के नीचे जो अंग सो पुच्छ। प्रतिष्ठा कहि  
ये। आधार है। जिस करि शरीर स्थिति होवै है ऐसे जो  
पाद सो प्रतिष्ठा कहिये है। तदपि कहिये। तिस ही ब्राह्म  
ण वाक्य करि कहा जो अर्थ तिस विषे। अन्वय के स्व  
रूप का प्रकाशक। एष कहिये यह। श्लोक कहिए मैं  
त्र। भवति कहिये होवै है ॥

हरिः ॥ ॐ ॥ सह नाववतु ॥ सह नौ भुवतु सह वीर्यं  
करावावहे ॥ तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषाव  
हे ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

ॐ नमः शिवाय गुरवे सच्चिदानन्दमूर्तये ॥

निष्प्रपञ्चाय शान्ताय निरालम्बाय तेजसे ॥ निरालम्ब  
समाश्रित्य सालम्बं विजहाति यः ॥ स सन्यासी च योगी  
च केवल्यं पदमश्नुते ॥ २ ॥ एषामज्ञानजीवानां सम  
त्कारिष्ठ शान्तये ॥ यद्यहो धृत्यमखिलं समाश्रित्य ब्रवी  
म्यहे ॥ ३ ॥

अर्थ प्रथम ॥ मंत्र शान्तिः ॥

ब्रह्मविद्या की प्राप्ति विषे विघ्न की निवृत्ति अर्थ शान्ति

पठन करते हैं। सकहिये। सोई उपनिषद् प्रतिपाद्य प  
रमेश्वर। नौ कहिये। शिष्य और आचार्य को ॥ अब



तु कहिये। रक्षा करहु। सह कहिये। सोई परमेश्वर  
 नौ कहिये। शिष्य और आचार्य। भुनक्तु कहिये भो  
 ग करवै वापालन करै। सह कहिये सोई परमेश्वर  
 वीर्य कहिये। विद्यारूप निमित्त वाले सामर्थ्य को॥  
 करवाव है कहिये। करहु। तेज स्वी कहिये। तेज  
 स्वी। अधीत कहि अध्येन अर्थ ज्ञान के योग्य है ॥  
 अस्तु कहिये। होहु। मा कहिये नहीं हम शिष्य आ  
 चार्य परस्पर। विद्विषाव है कहिये। द्वेष को न प्राप्त  
 हों॥ अध्यात्म अधिभूत। अधिदेव। तीन ताप की  
 निवृत्ति अर्थ तीन शंति हैं ॥ ७ ॥

शंतिः शंतिः शंतिः

शंति कहिये। शंति होहु। शंति होहु। शंति होहु ॥  
 अर्थ ॥ शिवाय गुरवे कहिये। कल्याण स्वरूप गुरु  
 सच्चिदानंदमूर्तये कहिये। सत्चित् आनंद स्वरूप  
 निष्प्रपंचाय कहिये जगत्तरहित। शंताय कहिये ॥  
 शंत स्वरूप। निगलंबाय कहिये। आलंब न रहि  
 त। तेज से कहिये। प्रकाश स्वरूप तिनके अर्थ नमः  
 कहिये नमस्कार है ॥ ७ ॥



अर्थ ॥ २ ॥ निरालंब कहिये । निरालंब जो  
 आत्मा है । तिसको समाश्रित्य कहिये । भले प्रका  
 र शंशय विपर्ययरहित आश्रय करि प्राप्त होके ।  
 सालंब कहिये । आलंब सहित जो नामरूपको ॥  
 यः कहिये जो । विजहाति कहिये । त्याग करता है ।  
 सकहिये सो । संन्यासी कहिये । त्यागी है । सा कहिये  
 सो । योगी कहिये । युक्त है । कैवल्य कहिये मोक्ष । प  
 द कहिये स्थान स्वर्गको । अश्रुते कहिये प्राप्त होता है ॥

अर्थ ॥ ३ ॥ एषां कहिये । यह । अज्ञान कहिये ।  
 स्वरूप का भूलना । जीवानां कहिये । मैं देह हों । स  
 मस्त कहिये सब । अरिष्ट कहिये अनर्थ जन्म मरण  
 का । शान्तये कहिये निवृत्त के अर्थ । यत्नयत् कहिये  
 जो जो । बोधय्यं कहिये जानि वे योग्य है । अखिलं सर्व  
 समाश्रित्य कहिये भली रीत आश्रय करि । ब्रवीम्यहं  
 कहिये मैं कहता हूँ ॥

प्रश्न ॥ ॥ किं ब्रह्म । किं सबस ब्रह्म । कः ईश्वरः ॥  
 कः शिवः । को जीवः । का प्रकृतिः । कः परमात्मा । को  
 ब्रह्मा । को विष्णुः । को रुद्रः । कः इन्द्रः । कश्च मनः । कः



सूर्यः। कश्चंद्रः। केसुराः। केमनुष्याः। केपिशाचाः।  
 कास्त्रियः। केपश्चादयः। किंस्थावरं। केब्राह्मणा  
 दयः। काकस्यजातिः। किंकर्म। किमकर्म। किंतपः।  
 किंमासुरं। किंज्ञानं। कोबंधः। कोमोक्षः। किंसुखं।  
 किंदुःखं। कःस्वर्गः। कोनर्कः। किंपरमंपदं। कः  
 उपास्यः। कोविद्वान्। कोमूढः। कःसन्यासी। किं  
 ग्राह्यं। किमग्राह्यं॥ इत्यादिप्रश्नः॥ किंब्रह्मकहि  
 ए। ब्रह्मकिसकोकहतेहैं॥ ७ ॥

उत्तर॥ अखिलोपाधिविनिर्मुक्तअनाद्यनंत  
 शुद्धं शान्तं निर्गुणं निरावयवं नित्यानंदमखंडैकरस  
 महितीयंचैतन्यंब्रह्म॥ अर्थ॥ अखिलकहि  
 ये। सम्पूर्ण। उपाधिकहिये। नामरूपतिससे विनिर्मु  
 क्तकहियेरहित। अनाद्यंतंकहिये। आदिनहींअंतनहीं  
 कहिये। पुण्यस्वरूप। शान्तंकहिये। संकल्पविकल्प  
 रहित। निर्गुणकहियेगुणरहित। निरावयवंकहि  
 ये। अंगरहित। नित्यानंदकहियेसदैवसुखएकरस  
 विषयानंदरहित। अखंडैकरसंकहिये। खंडरहित  
 पूर्णसदाएकहीसमान। अहितीयंकहि। द्वितीयर



हित। चैतन्य कहिये स्व प्रकाश। ब्रह्म कहिये नि  
 र्विशेष। व्यापक। तात्पर्य। निरुपाधि अनंत स्व  
 रूप आदि अंतरहित शांत निर्गुण निराकार चैतन्य  
 कर स अखंड अविनाशी नित्य व्यापक को ब्रह्म कह  
 ते हैं। प्रश्ना किं सबल ब्रह्म कहिये। सबल ब्रह्म किस को ब  
 हते हैं ॥ उत्तर ॥ अव्याहत ब्रह्मणि महा प्रधा  
 न त्रिगुणात्मिका महदहंकार पृथिव्य पतेजो वायु रा  
 काशात्मकेन च बृहद्रूपेण अंडकोशेन कर्मज्ञानार्थरू  
 पतया भासमानं सकल शक्त्युपचंहितं सबल ब्रह्म ॥  
 अर्थ ॥ अव्याहत ब्रह्मणि कहिये नहीं किसी के त  
 डन योग्य। अर्थात्। नहीं किसी करिता डित ऐसा जो  
 ब्रह्मति समे। महा प्रधान कहिए महा प्रकृति। त्रिगु  
 णात्मिका कहिये। सत्वरजतम सहित एही स्वरूप ॥  
 जिसका तिससे प्रथम। महदहंकार कहिये महत्तन  
 और अहंकार। पृथिव्य प कहिये पृथिवी और जल  
 तेज कहिये अग्नि। वायु कहिये। पवन। आकाश क  
 हिये आकाश। आत्मकेन कहिये दू न स्वरूप करिके  
 बृहद्रूपेण कहिये भारी रूप करिके। अंडकोशेन क



हिये। ब्रह्मांड को शक्ति। कर्म कहिये। जो किया जा  
 य। ज्ञान कहिये जान्ना। अर्थ रूप तथा। अर्थात् रू  
 पता करि। भासमान कहिये। प्रकाशमान। सकल  
 कहिये। सम्पूर्ण। शक्त कहिये सामर्थ्य करि। उप  
 दंहीत कहिये। बढा जो। सो सबल ब्रह्म है। अर्थात्  
 निर्गुण निरुपाधि स्वरूप ब्रह्म। सोई प्रकृत कहिये  
 गुण सहित को सबल ब्रह्म कहते हैं ॥ तात्पर्य ॥ नि  
 विशेष ब्रह्म। सोई सविशेष सबल ब्रह्म है द्वैत नहीं ॥  
 प्रश्न ॥ ॥ कः ईश्वरेति कहिये। ईश्वर किसको क  
 हते हैं ॥ उत्तर ॥ स्वशक्ति प्रकृत्यभिधामाश्रित्य  
 लोकान् सृष्ट्वा प्रविश्यान्तर्यामित्वेन ब्रह्मादिसंवाता-  
 नां सर्व प्राणिबुद्धीन्द्रियप्रकाशसाक्षिस्वरूपत्वादीश्व  
 रः ॥ अर्थ ॥ स्वशक्ति कहिये। अपनी शक्ति ॥  
 प्रकृत कहिये गुणों की साम्यता। अभिधा कहिये  
 नाम जिसका तिसको। आश्रित्य कहिये। प्रधान क  
 रि। लोकान् कहिये। लोकों को। सृष्ट्वा कहिये रचि  
 के। प्रावेश कहिये। प्रवेश करि। अन्तर्यामित्वेन कहि  
 ये। अन्तर्यामी करिके। ब्रह्मादिसंवातानां कहिये। ब्र  
 ह्मासे आदिलै चोटी तृणपर्यंत। सर्व प्राणिबुद्धीन्द्रिय कहि



ये। सर्वजीवोंकीज्ञानइंद्रियोंका। प्रकाशकहिये। प्र  
 काशक। साक्षीकहिये। दृष्टा। स्वरूपत्वात्कहिये  
 स्वरूपहोनेसे। ईश्वरकहिये। ईश्वरनियंताहै॥ ता  
 त्पर्य्य ॥ सर्वशक्तिमानब्रह्म॥ तात्पर्य्य ॥ अप  
 नेशक्तिप्रकृतिकेरचनाकाअंतर्गामी। दृष्टासाक्षी  
 ईश्वरहै॥ प्रश्न॥ कःशिवेतिचकहिये। शिवकि  
 सकोकहतेहैं॥ उत्तर॥ ईश्वरएवब्रह्माविष्णुई  
 शानें द्वादिनामरूपद्वाराग्निलोकमित्याद्यविद्याव  
 शाच्छिवः॥ अर्थ॥ ईश्वरकहियेसर्वऐश्वर्यमान  
 एवकहिये। निश्चय। ब्रह्माकहियेसृष्टिकाकर्ता॥  
 विष्णुकहियेपालक। ईशकहिये। संहारकर्ता॥ इ  
 न्द्रादिकहिये। इन्द्रादिसर्वदेवता। नामरूपद्वाराक  
 हिये। नामरूपमुख। अग्निलोककोआदिदै॥ अ  
 विद्यावशाच्छिवः कहिये। अज्ञानकेवशहोनेसे  
 शिवकहतेहैं॥ तात्पर्य्य ॥ सोईईश्वरअपनेप्रकृ  
 तिरचितरचनानामरूपकेसाथअविद्यावशीभूत  
 ईश्वरकोशिवकहतेहैं॥ प्रश्न॥ कोजीवःकहिये।  
 जीवकिसकोकहतेहैं॥ उत्तर॥ सोहमैकदेहवशा  
 जीवः। अर्थ॥ सोहंकहिये। सोमैं। एकदेहवशात्क



हिये। एक देह मात्र में अहंभाव होने से। जीवः कहिये जीव कहते हैं। अर्थात् सोई ब्रह्म ईश्वर अपने आप को एक शरीर ही मात्र में ममत्व अभिमान करने वाला जीव है ॥ प्रश्न ॥ का प्रकृतिः कहिये प्रकृति किसको कहते हैं ॥ उत्तर ॥ ब्रह्मणः सकाशान्नानाविचित्र जगन्निर्माणबुद्धिरूपेण ब्रह्मशक्तिरेव प्रकृतिः ॥ अर्थ ॥ ब्रह्मणः कहिये। सत्चित् आनंद। तिसके सकाशत् कहिये। तिसके समीपता सहारे से। जैसे चुम्बक पत्थर के सकाश से लोहा अनेक चेषा करता है ॥ तैसे प्रकृति ब्रह्म के सकाश से। नानाविचित्र जगत् कहिये ब्रह्मा से ले चींटी पर्यंत। जगत् कहिये जो उत्पत्ति ही है नाश जिसका तिसको। निर्माण कहिये रचने की सामर्थ्य जिसमें। ऐसी बुद्धिरूपेण कहिये बुद्धिरूप करिके स्थिति। ब्रह्मशक्तिरेव कहिये। ब्रह्म जो सत्चित् आनंद तिसकी शक्ति ही को प्रकृति कहते हैं ॥ तात्पर्य ॥ शक्तिमान से शक्ति भिन्न नहीं। परंतु विना चेतन के शक्ती कुछ नहीं कर सकती। क्योंकि शक्ती स्वतः चेतन नहीं चेतन पुरुष के आश्रित है। सर्व शक्तिमान् महा पुरुष चेतन है। उसके चेतन ही को प्रकृति शक्ति कहते



हैं। सोई अविद्यक जगत विस्तार। अरु लय किया  
 करती है। अरु चेतन चिन्मात्र पुरुष। सदा अविना  
 शी एकरसर होता है। चितना वेदना भावना वासना उ  
 समहा शक्तिमान चेतन पुरुष के शक्ति ही के नाम हैं ॥  
 प्रश्न ॥ कः परमात्मेति च ॥ कहिये परमात्मा कि  
 सको कहते हैं ॥ उत्तर ॥ देहादेह परत्वात् ब्रह्मैव  
 परमात्मा ॥ अर्थ ॥ देहादेह कहिये। स्थूल सूक्ष्म ॥  
 कारण। तीनों देहों से परत्वात्। परे होने से। ब्रह्मैव क  
 हिये ब्रह्म। सत् चित् आनंद। एव कहि निश्चय। पर  
 मात्मा कहिये। सब से परे जो आत्मा है। सोई परमात्मा  
 है ॥ तात्पर्य ॥ जो एक ही चिन्मात्र शान्त शता समा  
 म सर्व ब्रह्म स्वरूप सर्व जगत का स्वरूप अपना आप  
 है। सो तीनों शरीरों से भिन्न सदा असंग अविनाशी प  
 रमात्मा कहिये। परम अपना आप स्वरूप निराकार है  
 प्रश्न ॥ के ब्रह्माद्याः इति। कहिये। ब्रह्मादिक कौन  
 हैं ॥ उत्तर ॥ सब्रह्मा। सविष्णुः। सरुद्रः। समनुः सें  
 द्रः ससूर्यः सचंद्रः। सोऽसुराः। समनुष्याः। सपिशाचा  
 सस्त्रियः। सपश्यादयः। सस्थावरं। सब्राह्मणादयः स  
 वैखल्यिदं ब्रह्म नैह नानास्ति किंचन ॥ अर्थ ॥ सोई



ब्रह्म ब्रह्मा है। सशिवः कहिये। सोई सत्चित् आनंद  
 ब्रह्म। सो शिवः कल्याण रूप है। सविष्णुः कहिये। सो  
 ई विष्णु व्यापक है। सरुद्रः कहिये सोई रुद्र है। सेंद्रः सो  
 ई इन्द्र है। समनुः कहिये सोई मनु है। स्वयंभु आदयः।  
 ससूर्यः कहिये। सोई सूर्य है। सचंद्रः कहिये। सोई चंद्र  
 है। सोऽसुराः कहिये सोई असुर है। समनुष्याः कहिये सो  
 ई मनुष्य है। सपिशाचाः कहिये सोई पिशाच है। सस्त्रि  
 यः कहिये सोई स्त्री है। सपञ्चादयः कहिये। सोई पशुप  
 क्षी भी हैं सस्थावरं कहिये वृक्ष और पहाड़ है। सबाह्य  
 दयः कहिये। सोई बाह्य आदिकरि। क्षत्री वैश्य शूद्र है  
 सर्वखलु इदं ब्रह्म कहिये। सर्वखलु कहिये। निश्चय। इ  
 दं कहिये। ब्रह्म व्यापक सत्चित् आनंद स्वरूप है। नेह  
 नानास्ति किंचन कहिये। यह ब्रह्म में नाना नाम रूप किंचि  
 त् नही॥ नात्पर्य॥ प्रकृति रचित नाम रूप नाना त्ववि  
 षे परम प्रकाश ब्रह्म आत्मा एक ही है। सो एक ही विषे सर्व  
 अरु सर्व विषे एक सर्व का स्वरूप आप ही आप है। किंचित्  
 भी नाना त्व नहीं॥ प्रश्न॥ का जाति रिति कहिये। जाति  
 किसको कहते हैं॥ उत्तर॥ सरक्तस्य समांसस्य स्थूलश  
 रीरस्यात्मनो जाति व्यवहारो प्रकल्पितः॥ अर्थ॥ सरक्त



स्य कहिये। रक्त सहित। समांस स्य कहिये मांस सहित  
 स्थूल शरीर स्य कहिये। स्थूल शरीर की जाति। आत्म  
 नः कहिये। आत्मा को। जाति व्यवहार से कहिये जाति  
 का कथन। प्रकल्पित कहिये। अति शयकल्पित है॥  
 तात्पर्य॥ प्रकृति रचित नाम रूप जाति व्यवहार॥  
 आत्मा विषे कल्पना मात्र है। वास्तव नहीं॥ प्रश्न॥  
 किं कर्मेति। कर्म किसको कहते हैं॥ उत्तर॥ क्रिय  
 माणै रिंद्रियैः कर्म नाहं करोमी त्याद्यात्म निष्ठतया।  
 कृतं कर्मैव कर्म क्रियमाणैः कहिये। किया गया। इंद्रि  
 यें कहिये। इंद्रियों करि। कर्म कहिये। जो किया जाय।  
 ना कहिये नहीं। अहं कहिये मैं। करोमि कहिये कर  
 ता हों। इति कहिये ऐसे। आद्यात्म निष्ठतया कहिये  
 आत्म निष्ठा तिस करिके। कृतं कर्म कहिये। जो कर्म  
 किया। एव कहिये। निश्चय सोई कर्म है॥ तात्पर्य॥  
 आत्म निष्ठ पुरुष का जो कर्म इंद्रियों करिके होता है॥  
 तिसको आत्मा कहिये। अपने स्वरूप में आरोपण न  
 हीं करते। शांत स्वरूप आत्मा को कर्तृत्व भोक्तृत्व से  
 दा असंगर खते हैं। सोई कर्म है॥ प्रश्न॥ किं कर्मेति  
 ॥ उत्तर॥ कर्तृत्व भोक्तृत्वाहंकारादित्यादि बंधरूप



पञ्चमादिकारणनित्यनैमित्तिकयागव्रततपोदानं  
 तदकर्म ॥ अर्थ ॥ कर्तृत्व कहिये। कर्ता। भोक्तृत्व  
 कहिये भोक्ता अहं कहिये मैं हों। इत्यादिकहिये ध्या  
 ता औ प्रमाता हों। जन्मता और मर्ता हों। बंधरूपं क  
 हिये यही बंधन रूप। जन्मादिकहिये जन्ममरण  
 को। कारण कहिये हेतु। नित्य कहिये संध्योपासना  
 दिनै नैमित्तिक कहिये। आहु और विवाह यज्ञोपवीतादि।  
 याग कहिये यज्ञ। व्रत कहिये कृच्छ्र चांद्रायण। तप क  
 हिये शरीर और बाणीका और मनका। शरीरका तप।  
 शीतोष्णादि दूंदों का सहना। और बाणीका तप वेदपा  
 ठ और सत्य और प्रिय बोलना। मनका तप। मन को रो  
 कना। अर्थात् संकल्प विकल्प न उठने देना। अकर्म  
 कहिये अकर्म है ॥ तात्पर्य ॥ जिस जिस कर्म में कर्तृ  
 त्वका अभिमान है। सो भोक्तृत्व अवश्य है। या ते जो क  
 र्मका अभिमान है। सो बंध है सोई अकर्म है ॥ प्रश्न ॥  
 किंतु ये न कहिये। तप किसको कहते हैं ॥ उत्तर ॥  
 ब्रह्मैव सत्यं जगन्मिथ्या परोक्षज्ञानाग्निना ब्रह्मं द्राघैश्च  
 र्येण सन्नसन् संकल्पजं संतापं रूपं तपः ॥ अर्थ ॥ ब्रह्म  
 व कहिये। सत् चित् आनंद आत्मा व्यापक सो। सत्यं



कहिये। सत्य है। जगन्मिथ्या कहिये देहादिप्रपंच  
 जगतसो। मिथ्या कहिये है नहीं। प्रतीत मात्र है। दृ  
 ष्टान्त। जैसे भावना का चक्षु तै से है। अपरोक्ष ज्ञा  
 नेन कहिये। ऐसे साक्षात् अनुभवरूप ज्ञान अग्नि  
 मा ज्ञान अग्निकरि के। ब्रह्मेंद्रादि कहिये। ब्रह्मा और  
 इन्द्र आदिकरि और सर्व देवतों के। ऐश्वर्य एक  
 हिये विभव। सन्न सत संकल्प जं कहिये। मन की च  
 नितिस से जं कहिये उत्पन्न जो। संताप कहिये संदेह  
 तिस का त्यागरूप तप है ॥ तात्पर्य ॥ ब्रह्मस्वरूप अ  
 त्मानिराकार सत है। अरु साकार प्रपंच जगत मिथ्या  
 कहिये असत है। ऐसा साक्षात् अनुभव ज्ञान करि के  
 ब्रह्मा इन्द्रादि के ऐश्वर्य संकल्प चितिसंताप का त्या  
 गतप है ॥ प्रश्न ॥ किं आसुरं कहिये आसुर किसको  
 कहते हैं ॥ उत्तर ॥ ब्रह्मेंद्राद्यैश्वर्य कामनया निरश  
 नाग्निष्टोमाग्नि होत्रादिसत्कर्मणात्मानं संताप मा  
 चरति तमत्युग्रं ग द्वेष हिंसा दंभाद्यपेक्षितया आसु  
 रं ॥ अर्थ ॥ ब्रह्मा और इन्द्र का आदिक हिये सर्व देव  
 तों के। ऐश्वर्य कहिये विभव तिस की कामनया कहिये  
 कामना इच्छा करि। निरशनं कहिये अन्न नहीं खाना ॥



अग्निष्टोमाग्निहोत्रादिकहिये। यज्ञ और हवनादि।  
 सत्कर्मणा कहिये। निसकरिके। आत्मानं कहिये आ  
 त्माको। संतापं कहिये क्लेशको। आचरति कहिये॥  
 आचरण करतै है तम कहिए अंधका अत्युग्रं कहिये। अ  
 निशय घोर भयानक। राग कहि प्रीति। प्रीति कहिये  
 पुत्रधनादिके निमित्त करि। द्वेष कहिये शत्रु के ना  
 श के हेतु। हिंसा कहिये मारना॥ दंभादिकहिये पा  
 खंड। पाखंड कहिये दिखाने के निमित्त। आपेक्षि  
 तया कहिये इच्छा करि जो सो। आसुरं कहिये आ  
 त्माका हिंसक है। आत्मा की हिंसाये ही की आत्मा  
 स्वरूप को न जानना ॥ तात्पर्य ॥ ब्रह्मा इंद्रादिके  
 ऐश्वर्य और जगत सुख पुत्र दारा धनादिके प्राप्त अ  
 र्थ शुभ अशुभ क्लेशकारी कर्म। अरु शत्रु नाशार्थ  
 पाखंड हिंसाकारी कर्म। आसुरी आचरण है॥ अ  
 रुस्वस्वरूप को न जानना ही आत्महिंसा है॥ प्रश्न॥  
 किं ज्ञानमिति च ज्ञान किसको कहते हैं॥ उत्तर ॥  
 इंद्रियनिग्रह सद्गुरु उपासना श्रवण मनन निद-  
 ध्यासने क्रीडस्यानु रूपं सर्वान्तरस्थं सर्वमायिक घ-  
 टपटादि। पदार्थेषु विकारप्रपंचाधारानुस्यूतम्॥



विकारम् आत्मचैतन्यं विना न किंचिदस्तीति साक्षात्  
 कारानुभवो ज्ञानं ॥ अर्थ ॥ इंद्रियनिग्रह  
 कहिये ज्ञानेंद्रिय और कर्मेन्द्रिय और मन इन का  
 रोकना ॥ सदुरु कहिये जो वेदांत का पढ़ा हो और ब्र  
 ह्म में स्थिति हो ॥ उपासना कहिये सेवने से हुवा उ  
 पदेश सो। अवण कहिये तत्वमसि महावाक्य से जो  
 उपदेश। नत् कहिये जो सर्व जगत का जानने वाला  
 ईश्वर है सो। त्वं कहिये इस शरीर का जानने वाला ॥  
 असी कहिये है एही अवण है। मनन कहिये युक्ति से  
 मनन करना। युक्तियह। जैसे घट का देखने वाला प  
 रुष घट से अलग है। तैसे देह का जानने वाला देह से  
 अलग है। यह मनन है। निदध्यासन कहिये मैं दे  
 ह नही हों। मैं आत्मा ब्रह्म हों। एही निदध्यासन है  
 की उपाय रूप कहिये। इसी निदध्यासन के आनंद  
 को। अनुरूप कहिये सदृश। सर्वोत्तर स्थं कहिये स  
 व के अंतर स्थित। सर्व मायिक कहिये सर्व माया के र  
 चे। घट पटादिक कहिये घट और पट वस्त्र आदि  
 करि सर्व नाम रूप। पदार्थेषु कहिये। वस्तु अरु विष  
 य। विकार कहिये। उत्पत्ति नाशवान् ऐसा जो। प्रपं



च कहिये जगत तिसका आधार कहिये अधिष्ठान औ  
 र अनुसृत कहिये सबमें पोहा है। जैसे सब मणिका  
 सूतमें पोहे होते हैं। तैसे अविकार कहिये। विकार ज  
 लना मरना नहीं। आत्म कहिये व्यापक अपना स्वरू  
 प। चैतन्य कहिये स्वप्रकाश। तिसके बिना। न किं  
 चिदस्ति कहिये। नहीं और कुछ है एक चैतन्य  
 ही है। इति कहिये ऐसे। साक्षात्कार। कहिये अप  
 रोक्ष अनुभवमें ब्रह्म हों। इसी को ज्ञान कहिये ज्ञा  
 न कहते हैं ॥ तात्पर्य ॥ जैसे घट पट आदि प  
 दार्थ जगत का दृष्टा भिन्न ही रहता है। तैसे इस श  
 रीर का जानने वाला शरीर से अलग है। साधन संप  
 न्न विचार बोध करिके मैं देख नहीं हों। सर्वज्ञ आत्मा  
 हों। मेरा चिद्रूप अधिष्ठान सत्ता जो सर्वके अंत  
 रस्थित है। सो सायिक जगत प्रपंच से निर्विकार चे  
 तन ब्रह्म है। चेतन स्वरूप करित मरूप शरीर आदि सब  
 कुछ प्रकाश ता है। तम रूप शरीर आदि करि कुछ  
 नहीं प्रकाशता। ऐसा जो स्वयं प्रकाश चेतन आत्मा  
 निराकार ब्रह्म मैं हों। मेरे बिना कुछ नहीं ऐसे अपरो  
 क्ष अनुभव को ज्ञान कहते हैं ॥ प्रश्न ॥

॥ १ ॥



अज्ञानमिति च । अज्ञान किसको कहते हैं ॥ उ  
 त्तर ॥ अद्वितीय सर्वानुस्यूते सर्वमये ब्रह्मणिव  
 सतिलोष्टकस्थावरस्त्रीपुरुषवर्णाश्रमधर्मक  
 र्मबंधमोक्षोपाधितानात्मकल्पितज्ञानमज्ञानं  
 अर्थ ॥ अद्वितीय कहिये स्वगतस जाती विज  
 ती भेदरहित दृष्टान्त जैसे वृक्षमें स्वगत भेद पत्र  
 पुष्पफल है । और सजातीय वृक्षके और वृक्ष हैं  
 और विजाती लोहपाषाणादि हैं । तैसे ब्रह्ममेन है  
 क्योंकि ब्रह्म निराकार है । सर्वा कहिये । सवतिसवि  
 थे । अनुस्यूते कहिये । अनुस्यूत है । जैसे सतस  
 मणिकोंमें अनुसूत कहि पोहा होता है ॥ तैसे सर्व  
 मये ब्रह्मणिव सति कहिये सर्वमये ब्रह्म नीराकार  
 स्थित है । लोष्ट कहिये लोहाका छस्यावर कहिये  
 जो चलै नहीं जैसे वृक्षादि । स्त्रीपुरुष कहिये नारी  
 नर । वर्ण कहिये ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र । आश्र  
 म कहिये । ब्रह्मचर्य । गृहस्थ । वाणप्रस्थ । संन्या  
 स । धर्म कहिए पुण्य । कर्म कहिये जो किया जाय  
 बंधमोक्षोपाधि कहिये मैं देह हों । जन्मा हों मरूँ  
 मोक्षकामी हों । नानात्मकल्पितज्ञानं कहिये । नाना



प्रकारकल्पनाहोकाज्ञानजोसो। अज्ञानंकहिये अज्ञा  
 नहे॥ तात्पर्य॥ अद्वितीयकहिये अद्वैत। ब्रह्मस  
 रूपनिरुपाधिसर्वविषेणकरसव्यापकहे। तिसअखं  
 डस्वरूपकोखंडाकारजन्ममरणदिवंधमोक्षउपा  
 धिकरिनानाकल्पनाज्ञानकोअज्ञानकहतेहैं॥ प्र  
 श्न॥ बंधइतिच। बंधकिसकोकहतेहैं॥ उत्तर ॥  
 अनाद्यविद्यावासनयाहमित्यादिसंकल्पोबंधः य  
 माद्यष्टांगयोगसंकल्पोबंधः। अणिमाद्यष्टैश्वर्यसंकल्पो  
 बंधः। पितृमातृसहोदरपुत्रपौत्रबंधवादिममतासं  
 सारकारणसंकल्पोबंधः। देवमनुष्योंपासनाकाम  
 संकल्पोबंधः। यज्ञव्रततपोदानविधानसंबंधोबंधः  
 कामादिसंकल्पोबंधः सर्वसंकल्पोबंधः। मोक्षापे  
 क्षासंकल्पोबंधः। सर्वसंकल्पोबंधः॥ अर्थ॥ अ  
 नादिकहियेजिसकीआदिनहीं। अविद्याकहियेदे  
 हमेंसत्यज्ञान। वासनाकहिए। तिसमेंवसनाकिमेंदे  
 हहैं। अहमित्यादिकहिए। मैंदेहहों। मैंइंद्रीहों। मैंअं  
 तःकरणहों। मैंकर्ताहों। मैंभोक्ताहों। जन्मताहों। मर  
 ताहों। इत्यादिक॥ संकल्पोकहिएसंकल्प। विकल्प  
 बंधकहिएबंधनहे। यमाद्यष्टांगयोगकहिए। यमनि



नियम

यम। आसन प्राणायाम प्रत्याहार धारणा ध्यान। स  
माधि। संकल्पो बंधकहिए। कल्पना बंधन है। यमक  
हिए मन बांणी शरीर से। अहिंसा स्तेय ब्रह्मचर्य अ  
परिग्रह अहिंसा कहिए हिंसा न करना अस्तेय कहिए  
चोर न करना। ब्रह्मचर्य कहिए अष्टांग मैथुन का  
त्याग। अष्टांग मैथुन कहिए दर्शन कहिए देखना  
स्पर्शन कहिए स्पर्श करना। केलि कहिए क्रीडा। गृह  
भाषण कहिए एकांत वार्ता करना। संकल्प कहिए।  
उस निमित्त संकल्प विकल्पा अध्ववसाय कहिए नि  
श्चय॥ क्रियानिवृत्ति कहिए उसका भोग। सुख क  
हिए। तज्जन्य आनंद। अपरिग्रह कहिए शरीर स्थि  
ति मात्र उपयोगी। अन्न वस्त्रादिक से अधिक संग्रह न हो  
रखना। दान न हो लेना इसको यम कहते हैं। नियम क  
हिए शौच सन्तोष। तपः स्वाध्याय। ईश्वर प्रणिधान।  
शौच कहिए शुद्धता अनंतर और बाहर की अंतर की शु  
द्धता। वासना के त्याग से होती है। बाहर की सुद्धि मृति  
का स्पर्श और जल स्नान से होती है। संतोष कहिए जो  
कुछ प्राप्त हो उसमें चित्त की शांति। तप कहिए शरीर  
बांणी और मन का। शरीर का तप स्नान सेवा आदिक।



बाँलीकान पसत्यवचनादिक। और स्वाध्याय कहिए  
 वेद का पाठ और मन कान पशंती है। ईश्वर प्रणिधा  
 न कहिए औंकार का स्मरण। अथ वा ईश्वर पराय  
 ण्यह नियम है। आसन कहिये। स्वस्तिक आदि प्राणा  
 याम कहिए। प्राणकारोकना। पूरक कुंभ करे चक की  
 शक्ति से। प्रत्याहार कहिए थोड़ा खाना। और सज्ज हो जहाँ  
 मन जाय तहाँ तहाँ से खींच लेना। धारण कहिए। धार  
 ण करि अंतःकरण की वृत्ति संकल्प विकल्प अंतर से  
 रोकना। ध्यान कहिए उसी का प्रवाह अर्थात् ध्या  
 कार वृत्ती अरु अंतर से स्थिति करना। समाधि कहि  
 ए। उसी में स्थिति। यह जो अष्टांग योग आठ अंग क  
 रिके हैं। इसका संकल्प कहिए जो यह हमको होय ॥  
 एही बंधः कहिए बंधन है। अणिमा द्यष्टे अर्य संकल्प  
 बंधः। अणिमा कहिए। अणिमा। लघिमा। महि  
 मा। गरिमा। प्राप्तिः प्राकाम्य वशित्व ईशत्व। अणि  
 मा कहिए। सूक्ष्म शिला में भी प्रवेश हो जाय। लघि  
 मा कहिए छोटा सूर्य लोक को भी चला जाय। महि  
 मा कहिए। बड़ा व्यापक। गरिमा कहिए। भारी जल  
 में बैठा हो तो भी न उतराय। प्राप्तिः कहिए जहाँ इच्छा



होतहो जाय । प्राकाम्य कहिए इच्छा कानाशन-  
 हो । वशित्व कहिए । सबसाधीन । ईशत्व कहिए पशु  
 पक्षी देवता आदिक जिसरूपकी इच्छा हो धारण  
 करले ॥ अष्ट कहिए आठ ऐश्वर्य कहिए विभव  
 निसकासंकल्प कहिए इच्छा सो भीबंधः कहि-  
 ए । बंधन है । पितृमातृसहोदर पुत्रपौत्र बांधवा  
 दि ममता संसार कारण संकल्पो बंधः । पितृ क-  
 हिए पिता आदिक जिस सब कुटुंब व्यवहारिक जग-  
 त्को जान लेना इनकी जो ममत्व सहोदरत्व की भा-  
 वना है । सो ई संसार का कारण बीजरूप संकल्प क-  
 हिए इच्छा सो भीबंधन है । देव मनुष्योपासना का  
 म संकल्पो बंधः । देव कहिए देवता । मनुष्य कहि-  
 ए मनुष्य । शुकादि उपासना कि कामना संकल्प क-  
 हिए । इच्छा सो भीबंधः कहिए बंधन है ॥ य-  
 न्त्र कहिए अग्निष्टोमादि । व्रत कहिए चांद्रायणा-  
 दि । तप कहिए । शरीर शोषणादि । दान कहिए दे-  
 नाइन का जो विधान कहिए विधि । निसका जो सं-  
 बंधो बंधः कहिये । अपनेमें कृतत्व अभिमान क-  
 रिवंधन है कामादिकामना सुखके भोग की निस-



काजोसंकल्प कहिए। इच्छा सो। बंधः कहिए बंध  
 नहै। मोक्ष कहिए। जन्ममरनसे छूटना तिसकी अपेक्षा  
 कहिए। बांछा संकल्प कहिए। इच्छा सो बंधः।  
 कहिए। बंधनहै अर्थात् सदा मोक्षस्वरूप आत्मा  
 विषे बांछा मोक्षकी भी बंधनहै। सर्व कहिए संपूर्ण  
 संकल्प कहिए इच्छा सो बंधः कहिए बंधनहै। ना  
 त्यर्थ्य ॥ सर्व कल्याण का अधिष्ठान सदा शान्ति स  
 ता समान मोक्षस्वरूप निर्विकल्प आत्मा विषे नाना  
 कल्याण ही बंधनहै ॥ प्रश्न ॥ को मोक्षः इति च। मो  
 क्ष किसको कहते हैं ॥ उत्तर ॥ नित्य वस्तु विचार  
 त् अनित्य संसार संकल्प क्षय एव मोक्षः ॥ अर्थ ॥  
 नित्य वस्तु कहिए। जो तीनों काल में वस्तु रहै। ऐसा जो  
 आत्मा ब्रह्म तिसको विचारत। कहिए विवेक से। अ  
 नित्य कहिए। विनाशो। संसार कहिए जगत् तिसके सं  
 कल्प कहिये इच्छा तिसका क्षय एव कहिए। नाश ही  
 मोक्ष है ॥ नात्यर्थ्य ॥ जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तीनों अव  
 स्था काल का जगत्। अनित्य कहिए। विनाशो आया  
 अरु गया। अरु तीनों अवस्था काल का अंतर्गामी परमा  
 त्मा जो शान्त स्वरूप है सो ई अधिष्ठान सत्ता समान को



नित्यअविनाशी कहते हैं उसी साक्षी स्वरूप परमात्मा  
 विषे निर्विकल्पस्थिति ही का नाम मोक्ष है। इतर न ही  
 सदैव मोक्ष स्वरूप स्थायी नित्य मुक्त है ॥ प्रश्न ॥ किं  
 सुखमिति च। सुख किसको कहते हैं ॥ उत्तर ॥ सच्चि  
 दानंद स्वरूप ब्रह्मात्मपरोक्षानुभवं सुखमेव सुखं ॥  
 अर्थ ॥ सत् कहिए जो तीनों काल में रहै। चित कहिए  
 जो प्रकाश रूप ज्ञान स्वरूप। आनंद स्वरूप कहिए।  
 सुख रूप ब्रह्म कहिए। व्यापक निराकार जो आत्मा  
 कहिए अपना स्वरूप। तिसका। अपरोक्ष। कहिए। सा  
 क्षात् विल्व फल की नाई। अनुभव कहिए विज्ञान। सु  
 ख कहिए आनंद। एव कहिए। निश्चय सोई। सुख क  
 हिए आनंद है ॥ तात्पर्य ॥ त्रिकालाबाध सच्चि  
 दानंद आत्मा ब्रह्म निराकार व्यापक का निश्चय स्वयं  
 प्रकाश आत्मा साक्षात्कार अनुभव ही पूरा सुख है।  
 प्रश्न ॥ किं दुःखमिति च। दुःख किसको कहते हैं ॥  
 उत्तर ॥ अनात्म विषय संसार सुखमेव दुःखं ॥ अ  
 र्थ ॥ अनात्म कहिए दृश्य जो। विषय कहिए। शब्द  
 र्शोदिसंसार कहिए। जो उत्पन्न होना शहो। तिससे  
 जो सुख कहिए। आनंद सोई। एव कहिए निश्चय ॥



दुःख कहिए दुःख है ॥ तात्पर्य ॥ आपातरमणी  
 य कहिए देखने मात्र सुख । जगत परिणामी सुख सु-  
 ख दुःख रूप है ॥ प्रश्न ॥ कः स्वर्ग इति । स्वर्ग किस्को  
 कहते हैं ॥ उत्तर ॥ सत्पुरुषैः सहवास एव स्वर्गः ।  
 अर्थ ॥ सत्पुरुष आत्मनिष्ठ तिनका सहवास क-  
 हिए । उनका सत्संग समीपवसना सोई एव कहिए ।  
 निश्चय । स्वर्ग कहिए । स्वर्ग है ॥ तात्पर्य ॥ आत्म-  
 निष्ठ पुरुषों का सत्संग ही स्वर्ग है ॥ प्रश्न ॥ किं नर-  
 कमिति च । नरक किस्को कहते हैं ॥ उत्तर ॥ अस-  
 त्संसार विषयी जनसंसर्ग एव नर्कः ॥ अर्थ ॥ अस-  
 त्संसार कहिए । नही सत् ऐसा जो संसार कहिए । जगत देह-  
 स्त्री पुत्र धन में ही है । चित्त जिसका । विषयी जन कहिए  
 विषय जो शब्द स्पर्श आदिक में अनीति रति जन । तिनका  
 जो संसर्ग कहिए । उनका साथ । एव कहिए निश्चय ॥  
 नरक कहिए दुःख है । सो दुःख ही नरक है ॥ तात्प-  
 र्य ॥ संसार विषय रति मनुष्यों का संग समागम नि-  
 श्चय ही नरक है ॥ प्रश्न ॥ किं परमं पदमिति च । परम-  
 पद किस्को कहते हैं ॥ उत्तर ॥ सर्व शरीर प्राणेंद्रि-  
 यांतः करण गुण प्रधान परम सच्चिदानंदमयं सर्वसा-



शिकं नित्यमुक्तं ब्रह्मस्थानं परमं पदं ॥ अर्थ ॥  
 सर्वशरीर कहिए। ब्रह्मासे आदित्यपर्यंत प्राणेंद्रि  
 य अंतःकरण कहिए। प्राण अपान समान उदान वा  
 न इंद्रिय कहिये औ आदिक। ज्ञान इंद्रिय। और वागा  
 दिक कर्म इंद्रिय। अंतःकरण कहिए मन आदिक च  
 र। तीन गुण कहिए। सूक्ष्म रज तम। प्रधान कहिए। प्र  
 कृति। स एव। परम कहिए। उत्कृष्ट श्रेष्ठ। सच्चिदानं  
 द मयं कहिए। सत् कहिए नित्य चित कहिए प्रकाश रूप ज्ञान स्वरूप  
 आनंद कहिए। सुख। सर्वसाक्षिक कहिए। सब को दे  
 खने वाला। नित्यमुक्त कहिए सदा मुक्त। ब्रह्मस्थानं  
 कहिए। सच्चिदानंद व्यापक स्वरूप सोई परमं पदं क  
 हिए। परम पद है। जिससे परे पद नहीं सोई परम प  
 द है ॥ तात्पर्य ॥ सर्वशरीर प्राणेंद्रिय अंतःकरण  
 गुण प्रधान कहिए। प्रकृति रचित तम रूप है। परम  
 सच्चिदानंद मयं कहिए। सच्चिदानंद स्वरूप सर्वका प्र  
 काशक दृष्टा साक्षी व्यापक नित्यमुक्त निराकार अपन  
 व्याप स्वरूप ही परम पद है ॥ प्रश्न ॥ कः उपास्य  
 इति च कहिए। उपास्य कौन है ॥ उत्तर ॥ सर्वधार  
 चैतन्य प्रापको गुरु रूपास्यः ॥ अर्थ ॥ सर्वधारक।



हिए। सबका अधिष्ठान। चैतन्य कहिए। स्वप्रकाश  
 । प्रापक कहिए प्राप्त । गुरु कहिए। गोजो इंद्रियतिन  
 काहू कहिए। प्रकाशै। सो गुरु। उपास्यः कहिए॥ उ  
 पासनीय है ॥ तात्पर्य ॥ सर्वाधिष्ठान चैतन्य पुरु  
 ष सर्वत्र प्राप्त है। सोई परम गुरु उपासना करने यो।  
 ग्य है ॥ प्रश्न ॥ को विद्वान्निच। विद्वान किसको क  
 हते हैं ॥ उत्तर ॥ सर्वोत्तरस्थ स्वात्मविद्या परिज्ञा  
 नी विद्वान ॥ अर्थ ॥ सर्व कहिए स्वप्नमरूप-ति-  
 सके। अंतरस्थ कहिए। भीतर स्थिति। स्वात्मविद्या  
 कहिए अपना आत्मा तिसका ज्ञान। परिज्ञानी क-  
 हिए संशय विपर्ययरहित ज्ञानी सोई विद्वान कहिए  
 पंडित है ॥ तात्पर्य ॥ जिसके अंतर सर्व ऐसे जो सं  
 शय विपर्ययरहित स्वात्मविद्या कहिए अपने आ  
 पस्वरूप का जानने वाला सोई विद्वान पंडित है ॥  
 प्रश्न ॥ को मूढः इति च। मूढ किसको कहते हैं ॥  
 उत्तर ॥ जानिवर्णा अमकर्तृत्व भोक्तृत्वाहंकार।  
 भावनायारूढो मूढ ॥ अर्थ ॥ जातिक कहिए उत्प  
 न्न शरीर। वर्ण कहिए आश्रय। क्षत्री वैश्य शूद्र। आ  
 अम कहिए ब्रह्मचर्य। गृहस्थ। वाणप्रस्थासन्यास।



कर्तृत्व कहिए मैं करने वाला। भोक्तृत्व कहिए मैं भो-  
 गने वाला। अहंकार कहिए अहंभाव। भावनायां क-  
 हिए तिसके ध्यान मेरूढ़ कहिए दृढमजबूत सोई मू-  
 ढः कहिए मूर्ख है॥ तात्पर्य॥ जातिवर्णाश्रमकर्त-  
 त्वभोक्तृत्वदेहाभिमान है। सोई भावना मेरूढ़ता मूढ-  
 ता है॥ प्रश्न॥ किं ग्राह्यमिति। ग्राह्य कौन है॥ उ-  
 त्तर॥ सर्वदेशकालवस्तुपरिच्छेदराहित्यं चिन्मा-  
 त्रस्वरूपं ग्राह्यं॥ अर्थ॥ सर्व कहिए सब। देश क-  
 हिए गौडमालवादि। वस्तु कहिए नामरूपकाल। कहि-  
 ए। भूत भविष्य वर्तमान। दूसरा अर्थ। देश कहिए स्थ-  
 लशरीर। सूक्ष्मशरीर कारणशरीर। काल कहिए॥  
 जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति। वस्तु कहिए। विश्वतैजस प्राज्ञ-  
 इनके। परिच्छेद कहिए। भेद तिससे राहित्यं कहिए  
 रहित। चिन्मात्रस्वरूपं कहिए। शान्त प्रकाश ज्ञानमा-  
 त्रस्वरूप। ग्राह्यं कहिए। ग्रहण करने योग्य है॥ तात्प-  
 र्य॥ सर्व अवस्था कालविधि अभेद अविनाशी॥ ए-  
 कारसौ तम अरु प्रकाश का प्रकाशक। समान शान्त स-  
 ज्ञा मात्र जो स्वयं प्रकाश चिन्मात्र। निर्विशेष ज्ञान स्वरू-  
 प परमात्मा सर्वका एक ही अपना आप है सोई ग्रहण



करणे योग्य है ॥ प्रश्न ॥ किं अग्राह्यमिति च । अग्रा  
 ह्यक्या है ॥ उत्तर ॥ स्वस्वरूपव्यतिरिक्तमायामयं म  
 नो बुद्धि इन्द्रियविषयजगत्सत्यत्वचिंतनमग्राह्यं ॥  
 अर्थ ॥ स्वस्वरूप कहिए अपना सत्चित् आनंद स्व  
 रूपतिससे । व्यतिरिक्त कहिए । अलग । माया कहिए ।  
 जो नही है । उसको माया कहते हैं । मयं कहिए तत्स्व  
 रूप ही । मन कहिए मननाया संकल्प विकल्प । बु  
 द्धि कहिए निश्चय । इन्द्रिय कहिए । पंचतन्मात्रा शब्द  
 स्पर्शरूपरसगंध कहिए । श्रोत्रत्वचानेत्रजिह्वा । ना  
 सिका ज्ञानेन्द्रिया । वाक् पाणि पाद उपस्थ गुदा कर्मा  
 इन्द्रिया । जगत् कहिए । जो उत्पन्न हो और नाश हो । सत्य  
 त्वचिंतन कहिए । सत्य करितिस की चिंतन करना सो  
 अग्राह्यं कहिए नहीं ग्रहण है ॥ नान्यथ्य ॥ जो ब्रह्म  
 स्वरूप शांत चित्मात्र सत्ता समान है उसीको स्वस्वरूप  
 कहते हैं । उससे विलग जगत् की सत्यत्वविषयचिंतन  
 ग्रहण करने योग्य नहीं ॥ प्रश्न ॥ कः समाधिरिति स  
 माधिकिसको कहते हैं ॥ उत्तर ॥ सर्वकामानपरित्य  
 ज्य निर्ममो निरहंकारो भूत्वा ब्रह्म निष्ठं शरणमधिगम्य  
 तत्त्वमसित्वं तदसि । सर्वस्वत्विदं ब्रह्म नेह नानास्ति किं



चन। इदं गुं सर्वपदयमात्मेत्वादिमहावाक्यार्थात्तुभ-  
 बोद्धानं ब्रह्मैवाहमस्मीति निश्चित्य निर्विकल्पसमाधि-  
 नास्वतंत्रो यश्चरति समुक्तः। समुक्तः स परमहंसः। सो  
 वधूतः स सत्यासी। स सर्वविन्। सर्वज्ञोति। अर्थ ॥  
 सर्वकामान् कहिए सर्वकामनाको। परित्यज्य कहिए प-  
 रित्याग छोड़कर। निर्मम कहिए। स्त्री पुत्र धन भेद ममता  
 रहित। निरहंकार कहिए। देह इंद्रियादिक में भावरहि-  
 त। भूत्वा कहिए। होकर। ब्रह्म निष्ठ कहिए। ब्रह्म में स्थि-  
 तिको। शरण कहिए एकता। एकता कहिए आत्मा हीं  
 ब्रह्मै। अधिगम्य कहिए प्राप्त होकर। तत्त्व मसितत्त्व।  
 कहिए सो ईश्वर। त्वं कहिए जीव। असि कहिए है। त्वं त-  
 दसि त्वं कहिए जीव। तत्त्व कहिए। सो ईश्वर। असि कहि-  
 ए॥ है अर्थात् ईश्वर जीव है। जीव ही ईश्वर है। सर्वक-  
 हिए सब। खलु कहिए निश्चय। इदं कहिए है। ब्रह्म क-  
 हिए सत्चित् आनंद निराकार ही है। निह नानास्ति किं  
 चन कहिए नहीं है। यह नाना किंचित्। इदं कहिए यह  
 ॥ सर्व कहिए सब। यत् कहिए जो नाम रूप सो। अयं  
 कहिए यह। आत्मा कहिए। सत्चित् आनंद निराकार  
 है। इत्यादि कहिए इनका आदि ले कर। महावाक्य क-



हिए जो एकता का प्रतिपादन करता वेदवाक्य। अर्थ।  
 कहिए तात्पर्य। निसका। अनुभव कहिए। विज्ञान सो  
 ई ज्ञान कहिए जात्रा है। ब्रह्म कहिए सत्चित् आनंद  
 निराकार। एव कहिए निश्चय। अहं कहिए मैं। अस्मि  
 कहिए॥ हों। इति कहिए ऐसे। निश्चित्य कहिए। नि  
 श्चय करि। निर्विकल्प कहिए। जहाँ संकल्प विकल्प  
 नहीं। ऐसी जो समाधिना कहिए आत्मज्ञान करि।  
 स्वतंत्र कहिए स्वाधीन। यः कहिए जो पुरुष। चरति  
 कहिए गमन भक्षणादिक्रिया करता है। समुक्तः  
 कहिए सौ मुक्त है। मुक्त कहिए देहादिक की क्रिया  
 करि रहित है। समुक्तः कहिए सो सावधान है। स्वरू  
 प को भूलतानहीं। सपरमहंसः कहिए सो परमहं  
 स है। हंस कहिए जो आत्मानात्मा का विवेक करता  
 परमहंस कहिए परम शांत स्वरूप जहां विवेक की  
 क्रिया नहीं॥ सो बधूतः कहिए तत्पद का और त्वं प  
 द का जो लक्ष है। ससंन्यासी कहिए सो ई त्यागी है॥  
 ससर्ववित् कहिए। सो सब का जानने वाला है। सवा  
 ह्यणेति। कहिए। सो ब्राह्मण है। ब्रह्म जानाति ब्राह्मण  
 तात्पर्य॥ सर्वकामना का त्याग ममतारहित। देह



इंद्रियादिमें भावरहित ब्रह्म निष्ठ कहिए संशयविष-  
य परहित आत्मा ही ब्रह्म है। ऐसी स्थिति सम्पूर्ण निराका-  
र ब्रह्म ही भरि पूरि रहा है। नहीं है नानात्व किंचित् ॥ य-  
ह जो नामरूप भासि रहा है सो भी सच्चिदानंद आत्मा  
ही ब्रह्म निराकार का चमत्कार है। सर्व ओर से नि-  
श्चय करि निराकार ही निराकार है। ऐसी निर्विकल्प-  
आत्मज्ञान करि स्वतंत्र स्वाधीन जो है सो सदा समाधि-  
स्थ मुक्त है। सोई सावधान है। जो स्वरूप को कदाचित्  
नहीं भूलता। सोई विवेक कियारहित परमहंस पर-  
म शांत स्वरूप है। सोई अवधूत। सोई सन्यासी ॥ सो-  
ई सर्वज्ञ। सोई ब्राह्मण है ॥ प्रश्न ॥ कः सन्यासी इति  
सन्यासी किसको कहते हैं ॥ उत्तर ॥ स्वस्वरूपाव-  
स्थाई सर्व कर्मफल त्यागी सन्यासी ॥ अर्थ ॥ स्व-  
स्वरूप कहिए। अपना जो स्वरूप सत्त्वित् आनंद ति-  
स विषे अवस्थाई कहिए स्थिति। सर्व कहिए सर्व दे-  
ह इंद्रिय अंतःकरण ति सकरि जो किया जाय सो ॥ क-  
र्म कहि किया। ति सके फल कहिए सुख दुःख। ति सका-  
त्यागी कहिए नहीं ग्रहण कर्ता सो सन्यासी है ॥ तात्प-  
र्य ॥ स्वस्वरूप स्थाई सर्व देह इंद्रिय कर्म सर्व फल।



त्यागी सो सन्यासी हे ॥ प्रश्न ॥ को ब्राह्मेति । ब्राह्मण कि  
 सको कहते हैं ॥ उत्तर ॥ ब्रह्मविन् । स एव ब्राह्मेति ॥  
 अर्थ ॥ ब्रह्म का वेत्ता जानने वाला । स एव कहिए । सो  
 ई निश्चय । ब्राह्मण इति कहिए । ब्राह्मण ब्रह्म हे ॥ ता  
 त्पर्य्य ॥ ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः ॥ ॐ तत् सत् ॥ नि  
 रावलंबोपनिषदं यो धीते स ब्रह्म भूत्वा न स पुनरावर्तते  
 अर्थ ॥ निरावलंब कहिए । आलंब न रहित । अथवा ग्र  
 हण रहित । उपनिषद कहिए । उपसमीप । यो कहि  
 ये । जो पुरुष । अधीते कहिए । पढता है । स कहिए सो  
 ब्रह्म कहिए सत्चित् आनंद स्वरूप । भूत्वा कहिए हो  
 करि । न कहिए नहीं । स कहिए सो पुनः कहिए फिर ।  
 आवर्तते कहिए । जन्मता मरतानहीं । आदर के अर्थ  
 ही वार कहा । यच्चैतन्य मनुस्यूतं । जाग्रत स्वप्न सुषुप्तिषु  
 तदेव त्वं परं तत्त्वमितो नास्त्यधिकं परं ॥ अर्थ ॥ यत्  
 कहिए जो । चैतन्य कहिए प्रकाश ज्ञान स्वरूप आत्मा  
 अनुस्यूतं कहिए अनुगर्त प्राप्त है । जाग्रत कहिए स्थ  
 ल विषय में वा स्थूल शरीर में । स्वप्न कहिए सूक्ष्म विष  
 य वा सूक्ष्म शरीर में । सुषुप्ति कहिए अभाव विषय वा  
 कारण शरीर में । तत् कहिए सो । एव कहिए निश्चय ॥ त्वं



कहिएतुम। परम कहिए अष्ट। तत्त्व कहिए स्वरूप। इतः  
 कहिए इससे। अधिक परं कहिए इससे ऊपर अष्ट ॥  
 नास्तिक कहिए नहीं है ॥ तात्पर्य ॥ सर्व का अधिष्ठा  
 न सत्ता मात्र सर्व अवस्था काल जगत जीव ईश्वर जो  
 सर्व का अवबोधक सोई परम स्वरूप सर्व ब्रह्म आत्मा  
 है। इसे अधिक परमत तब और नहीं ॥ उन्तत्सत्तत्र ॥  
 ह्यणोनमः ॥

अथ सूक्ष्मतः सिद्धांत विचारः ॥

परस्पर मनीषी कहिए। मन नशील महापुरुष ग्रंथ  
 कारणों विषे है ता है त विवाद भी विदित ही है ॥ अरु ना  
 मरूप दृश्य जगत विषे तै साही व्यवहार भी प्रसिद्ध ही  
 है। सो भी विचारने योग्य है। क्योंकि है त विषे भी अद्वैत  
 ही सिद्ध है ॥

अद्वैत कहिए अद्वितीय। अरु विशिष्टाद्वैत कहिए है  
 त युक्त अद्वैत चिदाचिदविशिष्टं अद्वैतम्। विशिष्टा  
 द्वैतम् ॥ अर्थ ॥ ॥ चिद कहिए चेतन अरु अचिद  
 कहिए जड शरीर विस्थावर जंगम। निसक रियुक्त अ  
 द्वैत तिसी को विशिष्टाद्वैत कहते हैं तो क्या हुआ व्यवहा  
 र जगत कथन मात्र विशिष्ट पद रह। अरु जगत व्यव  
 हार विषे भी वस्तु रूप अद्वैत ही सिद्ध भया। अरु यह स  
 व जगत अद्वैत ही हुआ। सोई विचार सिद्ध ही। कीजानी



ओ

पुरुष जगत व्यवहार विषे सम दर्शन रहते हैं। समुव  
 र्तन नहीं होते। अंतरसे एक ही निराकार अंतर्यामी  
 अनुभवरूप ज्ञान स्वरूप परमात्मा सर्व का साक्षी तुरी  
 या पद विषे स्थित रहते हैं। सर्व में आप और आप में स  
 र्व देखते हैं ॥ ॥ और सर्व से असंग शंत स्वरूप अवि  
 नाशी सत्ता अपना आप विषे विराजते हैं। और जिस  
 को चिन्मात्र प्रकाश आत्मा कहते हैं। सदा निर्वि  
 शेष निराकार संवित सत्ता मात्र निरालंब स्वरूप प्र  
 काशते हैं ॥

ॐ तत्सदिति निरालंब स्वरूप प्रकाश  
 ग्रंथ समाप्तः

शुभमस्तु ॥ ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णं  
 त्पूर्णमुदच्यते ॥ पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णं  
 मेवावशिष्यते ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

हे महाशय महात्मा पहिले इन्ही साहेब ग्रंथ करता कीवना  
 इह इह ज्ञान गुट का बो विज्ञान गुट का छपि सु कि है वल कि  
 सो चारु रूप ने की नौ बत है यह ग्रंथ भी वहु अपूर्व है जिन  
 को खरीदना होय इस ग्रंथालय से मंगालेव की. पी. ७  
 मि. वै. सु. १ सं. १९४६



श्री  
राम ॐ राम  
श्री ॐ श्री  
राम श्री राम







